

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, जोहानिन थियोलाजी, सत्र 5, जॉन के सुसमाचार के उद्देश्य

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा जोहानिन धर्मशास्त्र पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 5 है, जॉन के सुसमाचार के उद्देश्य।

हम चौथे सुसमाचार के धर्मशास्त्र पर अपने व्याख्यान जारी रखते हैं, और हमें प्रभु की तलाश करनी चाहिए। दयालु पिता, हम आपके पुत्र, हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता, और आपके और हमारे बीच मध्यस्थ के माध्यम से आपकी उपस्थिति में आते हैं। हमें सिखाएँ, हम प्रार्थना करते हैं। हमारे दिलों को प्रोत्साहित करें। हमें अपनी सच्चाई में ले जाएँ। हम प्रार्थना करते हैं कि प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से अपनी अच्छी इच्छा के अनुसार हममें काम करें। आमीन।

हम चौथे सुसमाचार के उद्देश्यों पर पहुँच चुके हैं। हमने जॉन के सुसमाचार को लिखने में जॉन द्वारा इस्तेमाल की गई शैली और फिर सुसमाचार की संरचना के बारे में बात की। इसमें एक प्रस्तावना है, श्लोक 1 से 18, जो अध्याय 21 में उपसंहार के अनुरूप है।

अध्याय 2 या 1:19 से लेकर अध्याय 12 तक संकेतों की एक पुस्तक है, और फिर अध्याय 13 से 20 तक महिमा की पुस्तक है। यूहन्ना के सुसमाचार के उद्देश्य। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इसका मुख्य उद्देश्य सुसमाचार प्रचार है क्योंकि यूहन्ना ने हमें अध्याय 20 में इसके बारे में बताया है, इसलिए हमें वहीं जाना चाहिए।

पुनरुत्थान का वर्णन अध्याय 20 में किया गया है। पहली गवाही, यह तथ्य कि मरियम मगदलीनी पहली गवाह है, वास्तव में उल्लेखनीय है। एक महिला जिसकी गवाही पहली सदी में किसी पुरुष की गवाही जितनी महत्वपूर्ण नहीं होती।

यीशु मरियम मगदलीनी के सामने प्रकट हुए। मैं आपको एक कहानी सुनाता हूँ। धर्मशास्त्री आलोचनात्मक किस्म के होते हैं; हमें इसी तरह प्रशिक्षित किया जाता है।

कई सालों से मैं यह गाना सुनता आ रहा हूँ "इन द गार्डन"। मैं बगीचे में अकेला आता हूँ जब ओस अभी भी गुलाबों पर होती है, और मैं आवाज़ सुनता हूँ और इसी तरह की बातें। और मैंने सोचा, यार, यह कितना प्रारंभिक गीत है जिसमें कोई बाइबिल सामग्री नहीं है।

मेरा मतलब है, यह सिर्फ भावुकता है। और फिर किसी तरह मैंने एक पेज देखा, फोटोकॉपी या जो भी हो, एक भजन की किताब के पेज की तस्वीर, और बगीचे में, उसके साथ एक शास्त्र की आयत थी, शास्त्र का अंश। जॉन 20 की आयत 11 और उसके बाद।

यह बगीचे में मरियम की यीशु से मुलाकात है। वह मेरे साथ चलता है, और यह एक सुंदर भजन है। ऐतिहासिक संदर्भ ने सारा अंतर पैदा कर दिया।

वह मेरे साथ चलता है और मुझसे बात करता है और मुझे बताता है कि मैं उसका अपना हूँ। ओह, मेरी अच्छाई। किसी भी मामले में, उस उपस्थिति के बाद और थॉमस के बिना शिष्यों के लिए, श्लोक 24।

अब थॉमस, जो दिदिमुस नामक 12 में से एक था, जब यीशु आया तो उसके साथ जुड़वाँ नहीं था। इसलिए, दूसरे शिष्यों ने उससे कहा, हमने प्रभु को देखा है। वह पहले से ही प्रभु यीशु के नाम से जाना जाता है।

लेकिन उसने उनसे कहा, जब तक मैं उसके हाथों में कीलों के निशान न देख लूँ और अपनी उंगली कीलों के निशान में न डाल लूँ और अपना हाथ उसके पंजर में न डाल लूँ, मैं कभी विश्वास नहीं करूँगा। ये कठोर शब्द हैं। लेकिन हम उन शब्दों के लिए खुश हैं।

यीशु पापियों के प्रति दयालु हैं, यह तो निश्चित है, जैसा कि थॉमस के मामले से पता चलता है। आठ दिन बाद, उनके शिष्य फिर से अंदर थे, और थॉमस उनके साथ था।

यद्यपि द्वार बन्द थे, तौभी यीशु उनके बीच में आकर खड़ा हुआ, और कहा, “तुम्हें शान्ति मिले।” फिर उसने थोमा से कहा, “अपनी उँगली यहाँ लाकर मेरे हाथ देख और अपना हाथ बढ़ाकर मेरे पंजर में डाल। अविश्वास न कर, परन्तु विश्वास कर।”

संदेह करने वाले थॉमस के लिए एक विशेष निमंत्रण। यह ठीक है। हमारे पास अलग-अलग व्यक्तित्व, उपहार, झुकाव और अन्य क्षमताएँ हैं।

यीशु इस संदेह करने वाले व्यक्ति के प्रति दयालु हैं। थॉमस ने उसे उत्तर दिया, मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर। कुछ पंथ इस श्लोक का गलत अनुवाद करते हैं और इस तरह कहते हैं, हे मेरे परमेश्वर।

ऐसा नहीं कहा गया है। इसमें एक और यहूदी व्यक्ति का चेहरा दिखाया गया है और उसे अपना भगवान और ईश्वर बताया गया है। यह आश्चर्यजनक है।

बेशक, वह यहूदी आदमी जिसे वह यह कह रहा है वह ईश्वर आदमी है। यह बहुत उचित है। यीशु ने उससे कहा, क्या तूने इसलिए विश्वास किया है क्योंकि तूने मुझे देखा है? धन्य हैं वे जिन्होंने बिना देखे फिर भी विश्वास किया।

फिर, उद्देश्य कथन आता है। जॉन, यह वैसा ही है जैसा कि वह पहले जॉन में करता है। मैं ये बातें तुम्हें लिखता हूँ जो प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करते हो, ताकि तुम पा सको, और जान सको कि तुम्हें यहाँ अनन्त जीवन मिला है।

अब, यीशु ने अपने शिष्यों की उपस्थिति में कई अन्य चिन्ह दिखाए। यूहन्ना 20 आयत 30, जो इस पुस्तक में नहीं लिखा है। यूहन्ना चयनात्मक था।

उन्होंने सारांश के बाद लिखा। उन्हें सब कुछ दोहराने की ज़रूरत नहीं थी। उन्होंने सात चमत्कार चुने, उनमें से कुछ को उन उपदेशों के साथ जोड़ा जो संकेत से मेल खाते थे।

यीशु ने अपने चेलों के सामने और भी बहुत से चिन्ह दिखाए, जो इस पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं। परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो। जो नवीनतम गिनती मैंने सुनी है, उसमें मैं 99 के स्थान पर 100 सुनता था।

मेरा अनुमान है कि यह पाठ्य आलोचना का काम है। अट्टानबे बार। मेरा मतलब है, वास्तव में, यह एक बड़ा अंतर है कि चौथे सुसमाचार में विश्वास होता है कि आप विश्वास कर सकते हैं कि यीशु मसीह है, वादा किया गया व्यक्ति, मसीहा, ईश्वर का पुत्र, ईश्वरीय राजा जिसे हमेशा के लिए दाऊद के सिंहासन पर बैठने के लिए भेजा गया है और विश्वास करने से आपको उसके नाम पर जीवन मिल सकता है।

संकेत, आस्था, मौखिक रूप, और जीवन में विश्वास उद्देश्य कथन में समाहित हैं। मैं दोहराता हूँ। बारह सैंतीस पहले लिखा गया था, लेकिन ये दोनों अंश एक दूसरे के विपरीत हैं।

हालाँकि उसने उनके सामने बहुत से चिन्ह दिखाए थे, फिर भी उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया। यह यूहन्ना बारह सैंतीसवाँ अध्याय है। यह अध्याय बारहवाँ अध्याय होगा।

यह हाथ अध्याय बीस है। हालाँकि उसने बहुत सारे चिन्ह दिखाए थे, यीशु ने अपने शिष्यों की उपस्थिति में और भी कई चिन्ह दिखाए। लेकिन ये लिखे गए हैं।

उसने उनके सामने बहुत से चिन्ह दिखाए, बारह सैंतीस। उसने अपने शिष्यों की उपस्थिति में और भी बहुत से चिन्ह दिखाए। ये श्रोता हैं।

यह, फिर से, पुस्तक की रूपरेखा है। संकेतों की पुस्तक के श्रोता यहूदी दुनिया हैं, दुनिया, यहूदी, पूरे सुसमाचार के श्रोता, और विशेष रूप से महिमा की पुस्तक के श्रोता शिष्य हैं। 13:1 में, यीशु उसे ऊपरी कमरे में ले जाता है और दरवाजा बंद कर देता है।

अब और नहीं। दुनिया ही तत्काल ध्यान केन्द्रित है। ओह, वह जो कहता है वह दुनिया से सम्बन्धित है।

वह बीसवें अध्याय में महान आदेश का जॉन का संस्करण देता है। और सत्रहवें अध्याय में भी, महान पुरोहितीय प्रार्थना में, वह सुसमाचार प्रचार की बात करता है। इसलिए वह दुनिया को बाहर नहीं कर रहा है, लेकिन उसका श्रोता अब दुनिया नहीं है।

उसके श्रोतागण बारह शिष्यों में से एक को छोड़कर ग्यारह शिष्य हैं। यद्यपि उसने उनके सामने इतने सारे चिन्ह दिखाए थे, फिर भी उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया। ये इसलिए लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करने से तुम जीवन पाओ।

उनके नाम में कोई संदेह नहीं है, और विद्वानों के बीच इस बात पर बहुत आम सहमति है कि यूहन्ना के सुसमाचार का प्राथमिक उद्देश्य सुसमाचार प्रचार है। हालाँकि, मुझे लगता है कि यह एकमात्र उद्देश्य नहीं है। पूरी किताब का उद्देश्य क्या है? ज़रूर।

लेकिन संकेतों की पुस्तक, महिमा की पुस्तक, क्षमा करें, विशेष रूप से अध्याय तेरह से सत्रह, मुझे लगता है कि इसका एक अतिरिक्त उद्देश्य है। वास्तव में, उनका मुख्य उद्देश्य चर्च का प्रतिनिधित्व करने वाले शिष्यों का उत्थान प्रतीत होता है। यीशु उनके पैर धोते हैं, उन्हें न केवल एक दूसरे के लिए विनम्र सेवा सिखाते हैं बल्कि पापों की दैनिक क्षमा की आवश्यकता भी सिखाते हैं।

वह सत्य की आत्मा, जीवन की आत्मा का वादा करता है। वह उन्हें उत्पीड़न की चेतावनी देता है। वह बताता है कि आत्मा दुनिया में क्या करने जा रही है।

ये सभी विषय शिक्षा के लिए हैं, शिष्यों के निर्माण के लिए ताकि वे दुनिया में परमेश्वर का कार्य कर सकें। सुसमाचार प्रचार, प्राथमिक उद्देश्य। विदाई प्रवचन, शिक्षा का एक द्वितीयक उद्देश्य।

अध्याय सत्रह। महायाजकीय प्रार्थना का उद्देश्य सुसमाचार प्रचार नहीं है। ओह, सुसमाचार प्रचार इससे निकलता है, लेकिन इसका उद्देश्य शिष्यों को उसके जाने के लिए तैयार करना है।

यह पिता की महिमा और पुत्र की महिमा और शिष्यों की पवित्रता और एकता के लिए पिता से प्रार्थना करना है और यह कि वे परमेश्वर की महिमा करें और परमेश्वर, पिता, यीशु की भूमिका को अपनाएँ और जब यीशु पिता के पास वापस आएँ तो उनकी रक्षा करें। और फिर, आशा का महान विषय भी। पिता, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप इन्हें ले लें, मैं उन लोगों के लिए प्रार्थना करता हूँ जिन्हें आपने मुझे दिया है कि वे वहीं हों जहाँ मैं हूँ।

यीशु पहले से ही खुद को पिता के पास वापस देख रहा है, और वे मेरी महिमा देख सकते हैं। वह महिमा जो आपने मुझे दी क्योंकि आपने दुनिया के निर्माण से पहले मुझसे प्यार किया था।

मुझे यकीन है कि सुसमाचार प्रचार जॉन के सुसमाचार का नंबर एक विषय और उद्देश्य है। मुझे यह भी यकीन है कि विदाई प्रवचनों और उच्च पुरोहित प्रार्थना में शिक्षा का एक दूसरा उद्देश्य भी है। अध्याय तेरह और सत्रह।

मैं निश्चित नहीं हूँ, लेकिन मुझे संदेह है, मैं कहूँगा कि शायद, इसमें क्षमा याचना का एक छोटा सा विषय है। यहाँ-वहाँ से उभरता हुआ। तो, पहले अध्याय में नतनएल के साथ ही, फिलिप ने नतनएल को पा लिया।

फिलिप नतनएल का गवाह था। एंड्रयू पीटर का गवाह था। जब यीशु दुनिया में आता है तो हमारे पास दो अलग-अलग यहूदी धर्म और दो अलग-अलग प्रकार के यहूदी होते हैं।

यहूदी नेता शुरू से लेकर आखिर तक यीशु के खिलाफ़ थे। शिमोन, यूसुफ़ और मरियम, शिमोन, अन्ना, जकर्याह, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के पिता, स्वयं यूहन्ना और शिष्य यहूदियों की एक बहुत ही अलग श्रेणी का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे लचीले हैं।

वे प्रभावित होते हैं, और शुक्र है कि यीशु उन्हें प्रभावित करते हैं। इसलिए, नतनएल, फिलिप नतनएल से बात करता है। हमने उसे पाया है, यूहन्ना 145, जिसके बारे में मूसा ने व्यवस्था में और भविष्यवक्ताओं ने भी लिखा है।

नासरत का यीशु, यूसुफ़ का पुत्र। इसमें मसीहा नहीं लिखा है, लेकिन शब्दों का यही अर्थ है। वास्तव में, पुराने नियम में मसीहा शब्द का प्रयोग बहुत कम किया गया है, लेकिन यह अवधारणा निश्चित रूप से कई अलग-अलग तरीकों से मौजूद है।

नतनएल का मनुष्य का पुत्र, अध्याय 7, यशायाह में प्रभु का पीड़ित सेवक, 52, 53 का अंत। महान दाऊद के राजा ने 2 शमूएल 7, फिर यशायाह 9 और अन्य ग्रंथों में भी वादा किया। नतनएल ने फिलिप से पूछा कि क्या नासरत से कुछ अच्छा निकल सकता है। शहर की बदनामी थी, शहर, इसमें कोई शक नहीं।

फिलिप्पुस ने कहा, "आओ और देखो।" यह एक अच्छा उत्तर है। यीशु ने नतनएल को अपनी ओर आते देखा और उसके विषय में कहा, "देखो, यह एक इस्राएली है, जिसमें कोई छल नहीं।"

यहूदी नेताओं के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता। ऐसा बिलकुल नहीं कहा जा सकता। एक निष्कपट इस्राएली, एक खुला आदमी, एक खुले दिमाग वाला इंसान, एक ईश्वरीय आदमी।

यह यूसुफ़ और मरियम का वर्णन है। तुम मुझे कैसे जानते हो? नतनएल ने उससे कहा, तुम मुझसे कभी मिले ही नहीं। यीशु ने उसे उत्तर दिया, फिलिप्पुस के बुलाने से पहले, जब तुम अंजीर के पेड़ के नीचे थे, मैंने तुम्हें देखा था।

जाहिर है, यह अलौकिक ज्ञान है। यह कोई संकेत नहीं है, बल्कि सिनॉप्टिक गॉस्पेल में यीशु द्वारा अपने प्रतिद्वंद्वी के विचारों को पढ़ने जैसा है। यहाँ, यीशु, हमें नहीं लगता कि नतनएल इतना भोला है। यीशु उसे दूर से देख सकता था, और नतनएल कहता है, तुम मसीहा हो।

हमें ऐसा नहीं लगता। हमें लगता है कि यीशु ने कुछ अलौकिक ज्ञान दिखाया जिससे वह आश्चर्यचकित हो गया। नतनएल ने कहा, रब्बी, आप परमेश्वर के पुत्र हैं।

आप इसराइल के राजा हैं। वह सही कह रहे हैं। बेटा एक शाही उपाधि है।

यह एक शाही उपाधि है। निर्गमन, अध्याय 3 में इस्राएल परमेश्वर का पुत्र था। प्रभु, यहोवा, इस बात से बहुत परेशान है कि फिरौन ने उसके बेटे इस्राएल के साथ दुर्व्यवहार किया, जिसे वह प्यार करता है और जिसे उसने चील के पंखों पर सवार किया है। लगता है होशे भी नौ पर है।

और उसने कहा कि मैं तुम्हारे बेटे को ले जा रहा हूँ। खेल की शुरुआत में, परमेश्वर भविष्यवाणी करता है कि वह फिरौन के साथ क्या करने जा रहा है। दूसरा शमूएल 7. दाऊद को परमेश्वर के लिए एक घर, एक मंदिर बनाने की अनुमति नहीं दी जाएगी, लेकिन परमेश्वर दाऊद के लिए एक घर, एक राजवंश बनाने जा रहा है।

और उसकी कमर से एक राजा आएगा जो हमेशा राज करेगा। इसलिए, यीशु को नए नियम और सुसमाचार में पहले से ही दाऊद का पुत्र कहा जाता है। वह, वास्तव में, दाऊद का पुत्र है।

वह डेविड की वंशावली से है, मरियम के माध्यम से रक्त-वंश। यदि आवश्यक हो, तो आधिकारिक दर्जा जोसेफ के माध्यम से भी उपलब्ध है। उसका शाब्दिक, शारीरिक पिता नहीं, लेकिन हम उसे उसका सौतेला पिता कहेंगे, अगर आप चाहें तो।

आप ईश्वर के पुत्र हैं। और वह उस उपाधि की व्याख्या करता है। आप इस्राएल के राजा हैं।

यीशु ने कहा, क्योंकि मैंने तुमसे कहा, मैंने तुम्हें अंजीर के पेड़ के नीचे देखा, क्या तुम विश्वास करते हो? तुम इनसे भी बड़ी चीजें देखोगे। फिर उत्पत्ति 28:12 में याकूब की सीढ़ी के बारे में उद्धरण आता है। सच-सच, मैं तुमसे कहता हूँ, तुम स्वर्ग को खुला हुआ और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र पर चढ़ते और उतरते देखोगे। और नतनएल, तुम समझ जाओगे कि मैं परमेश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ हूँ।

जैसा कि पॉल ने बाद में लिखा, ईश्वर और मानव के बीच एक मध्यस्थ है, मनुष्य, मसीह, यीशु। मैं पूरी कहानी और इन दो अलग-अलग प्रकार के यहूदियों के प्रकाश में, नतनएल और यीशु के शब्दों को क्षमाप्रार्थी, एक मामूली क्षमाप्रार्थी राग में देखने में मदद नहीं कर सकता, कहीं तो, उसे इस्राएलियों के साथ तुलना करते हुए, जिनमें बहुत अधिक छल है, इस्राएल के नेताओं के साथ। यही सच्चा इस्राएल है।

यीशु सच्चे इस्राएल हैं। उनके ग्यारह शिष्य सच्चे इस्राएल हैं। और उनके शिष्य भी सच्चे इस्राएल हैं।

यह सब इसराइल, खास तौर पर जातीय इसराइल के भविष्य को नहीं रोकता। और यह इवेंजेलिकल्स, यहां तक कि रिफॉर्मड इवेंजेलिकल्स के बीच भी लगभग सर्वसम्मति है। मैं जॉन मुरे, थॉमस श्राइनर, डगलस मू एंथनी होकेमा के बारे में सोचता हूँ, और मैं उनके लीग में नहीं हूँ, लेकिन मैं उनसे सहमत हूँ।

रोमियों 11 अब्राहम और सारा के रक्त वंशजों के लिए एक भविष्य सिखाता है कि उनमें से कई प्रभु को जानेंगे। मेरा अपना मानना है कि हर प्रमुख युगांतशास्त्रीय विषय पहले से ही है और अभी तक नहीं है। इस प्रकार मैं मसीह के आगमन के बीच कई यहूदियों के धर्मांतरण में उस अंश को पूरा होता देखता हूँ; यह पहले से ही है, और मसीह के दूसरे आगमन की ओर एक बड़ी फसल है, लेकिन यह अभी तक नहीं है।

इसलिए, मैं इस भाग में एक क्षमाप्रार्थी स्वर देखता हूँ, जो यीशु के गवाहों का एक भाग है। याद रखें, वह परीक्षण पर है, और तुरंत, प्रस्तावना में, जान बैपटिस्ट गवाह है, फिलिप नतनएल के लिए गवाह है, और एंड्रयू पीटर के लिए गवाह है, लेकिन उस कार्य में, नतनएल के जीवन में भगवान के काम में, हमारे पास एक क्षमाप्रार्थी स्वर है, मैं इसे एक छोटा उद्देश्य कहूंगा। तो, निकुदेमुस के साथ।

निकुदेमुस चौथे सुसमाचार में तीन बार आता है। अध्याय 3 में, वह यीशु की तलाश में आता है। मैं उसे एक ईमानदार साधक के रूप में लेता हूँ जो और अधिक सीखना चाहता है।

वह सार्वजनिक रूप से उससे बात नहीं कर रहा है, उसे बुरे सवालों से उलझाने की कोशिश नहीं कर रहा है, लेकिन वह ईमानदारी से गलत है, और यीशु इस ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। आप इस्राएल के शिक्षक हैं? आप नए जन्म के बारे में नहीं जानते? क्या आप यहजेकेल 36 को नहीं समझते हैं, जहाँ परमेश्वर कहता है कि अंतिम दिनों में, वह अपनी आत्मा भेजेगा, और आपके पत्थर के दिल को निकाल देगा, और आपको मांस का दिल देगा, एक दिल जो बहुत गर्म और व्यवस्था के प्रति, परमेश्वर के वचन के प्रति खुला होगा? उसे ये बातें पता होनी चाहिए थीं, लेकिन वह नहीं जानता था। और यीशु, सीधे तौर पर, लेकिन अशिष्टता से नहीं, उसे फटकारते हैं।

मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, अगली आयत में हम वही बोलते हैं जो हम जानते हैं और जो हमने देखा है उसकी गवाही देते हैं, लेकिन तुम हमारी गवाही स्वीकार नहीं करते। हो सकता है कि वह बोल रहा हो, क्योंकि मुझे लगता है कि यह पिता और पुत्र दोनों हैं। वह पिता की ओर से बोलता है।

और, बेशक, पवित्र आत्मा, हालाँकि यूहन्ना ने ऐसा नहीं कहा। अगर मैंने तुम्हें सांसारिक बातें बताई हैं, और तुम विश्वास नहीं करते, तो अगर मैं तुम्हें स्वर्गीय बातें बताऊँ तो तुम कैसे विश्वास कर सकते हो? नया जन्म सांसारिक चीज़ कैसे है? क्योंकि जैसा कि हमने देखा, शब्द फिर से, या ऊपर से, एक और, का दोहरा अर्थ है। अगर नया जन्म दूसरा जन्म है, न केवल इतना, बल्कि स्वर्ग से, ऊपर से, भगवान से जन्म है, तो नया जन्म सांसारिक चीज़ कैसे है? इसका उत्तर यह है कि यह पृथ्वी पर होता है।

यह अलौकिक है। यह ऊपर से है, लेकिन यह बहुत नीचे है। यह धरती पर घटित होता है।

स्वर्ग में संतों को पुनर्जन्म की आवश्यकता नहीं है; वे पहले से ही पुनर्जन्म ले चुके हैं। यह पृथ्वी पर पापियों का मामला है, जो अपने पापों में मरे हुए हैं, जिन्हें फिर से जन्म लेने की आवश्यकता है। अगर मैं आपको स्वर्गीय बातें बताऊँ, यानी पिता की उपस्थिति में क्या हो रहा है, और पवित्र स्वर्गदूतों और उस तरह की अन्य बातें, तो आप कैसे विश्वास करेंगे? मुझे लगता है।

चूँकि वह हमें नहीं बताता, इसलिए हम अनुमान लगा रहे हैं। इसलिए, निकुदेमुस को उसकी जगह पर रखा गया, और उसे बुलाया गया, उसे यह जिम्मेदारी दी गई कि वह वह नहीं जानता जो उसे जानना चाहिए। मेरा मतलब है, वह पुराने नियम का बड़ा शिक्षक है, है न? हे भगवान।

और वह सीखता है, कम से कम, वह उत्सुक है। इसलिए, अध्याय 7 में, यह उल्लेखनीय है। मैं जॉन के सुसमाचार के माध्यम से निकोडेमस के तीन दर्शनों का पता लगा रहा हूँ।

अध्याय 7 में, बेशक, हमेशा की तरह, यीशु के बाद यीशु के लिए लोगों के बीच विभाजन है, झोपड़ियों के पर्व पर शब्द। झोपड़ियों का पर्व। कुछ लोग विश्वास करते हैं, कुछ नहीं।

हमने एक बहुत बड़ी गलतफ़हमी देखी। वे इस पर विश्वास नहीं करते क्योंकि वे नहीं समझते कि यीशु बेथलेहम से हैं। उन्हें लगता है कि गलील से होने के कारण वे अयोग्य हैं।

इसलिए, लोगों में उसके बारे में मतभेद था। उनमें से कुछ उसे गिरफ़्तार करना चाहते थे, लेकिन किसी ने उस पर हाथ नहीं डाला। यहाँ ऐसा नहीं कहा गया है, लेकिन आप पंक्तियों के बीच में पढ़ सकते हैं क्योंकि उसका समय अभी नहीं आया था।

यह बात पहले भी दो बार उसी भाव में कही गई है। दो बार, उसी भाव से जवाब दिया गया। वे उस पर हाथ डालना चाहते थे, लेकिन उसका समय अभी नहीं आया था।

फिर अधिकारी मुख्य याजकों और फरीसियों के पास आए और पूछा कि वे उसे क्यों नहीं लाए। अधिकारियों ने उत्तर दिया कि इस आदमी की तरह कभी कोई नहीं बोला। फरीसियों ने उनसे कहा, क्या तुम भी धोखा खा गए हो? क्या अधिकारियों या फरीसियों में से किसी ने उस पर, महान लोगों, अधिकारियों पर विश्वास किया है? लेकिन यह भीड़ जो कानून नहीं जानती, शापित है। फिर से कानून है।

नीकुदेमुस, जो पहले उसके पास गया था, ने एक संपादकीय या व्याख्यात्मक टिप्पणी की, इस चरित्र की पहचान अध्याय 3 में रात में यीशु के पास आने वाले व्यक्ति के रूप में की, और जो उनमें से एक था, जिससे उनकी गलती का पता चलता है क्योंकि फरीसियों में से एक भले ही वह विश्वास न कर रहा हो, वह कहता है कि यीशु को निष्पक्ष सुनवाई मिलनी चाहिए। वास्तव में, नेताओं ने भीड़ पर कानून के बिना होने का आरोप लगाया, और नीकुदेमुस ने कहा, क्या हमारा कानून किसी व्यक्ति को पहले उसकी सुनवाई किए बिना और यह जाने बिना कि वह क्या करता है, न्याय करता है? वह उसे कार्य करने के लिए कहता है। क्या यह एक ज्वलंत गवाही है? नहीं।

लेकिन वह नेता के अनुमान में गलत टीम के साथ पहचान कर रहा है। वह यीशु से प्रभावित है। न केवल मंदिर पुलिस ने उसे अंदर नहीं लाया, बल्कि महासभा के एक सदस्य, एक फरीसी, इसराइल के एक महान शिक्षक ने कहा कि यीशु को निष्पक्ष सुनवाई का हक है।

यही तो व्यवस्था कहती है। वे इसे सुनना नहीं चाहते। अध्याय 7 की आयत 52. क्या तुम भी गलील से हो? खोजो और देखो।

गलील से कोई नबी नहीं आता। खैर, योना गलील से आया था। शायद उनका मतलब है कि अब कोई नबी नहीं आएगा या उसके बाद कोई नबी नहीं आएगा।

मुझे नहीं पता। किसी भी मामले में, निकोडेमस महासभा, फरीसियों और मुख्य पुजारियों के अविश्वास के लिए एक बाधा के रूप में कार्य करता है। वह निश्चित रूप से यहूदी प्रतिष्ठान का हिस्सा है, और वह यीशु की तलाश करता है।

उसे उसकी जगह पर रखा जाता है। यह उसे इस हद तक निराश नहीं करता कि वह यीशु को पूरी तरह से अस्वीकार कर दे। वह उत्सुक है, और यहाँ वह यीशु के अधिकार के लिए खड़ा होता है कि कम से कम उसकी बात सुनी जाए।

अध्याय 19 में महान निष्कर्ष है, जहाँ सैनहेड्रिन का सदस्य निकोडेमस सार्वजनिक रूप से यीशु के क्रूस पर चढ़ाए गए शरीर के साथ अपनी पहचान बताता है। व्यवस्थाविवरण का नियम कहता है कि जो कोई पेड़ पर लटका दिया जाता है वह शापित है। यह कई टिप्पणीकारों को लगता है, और मैं सहमत हूँ, यीशु और उसके विश्वास के साथ उसकी पहचान की तरह।

अब मान लिया गया है कि यह एक मृत मसीहा में है, लेकिन मेरा मतलब है, वह अभी भी पुनरुत्थान में विश्वास नहीं कर सकता है। यूहन्ना 19:38, 38। इन बातों के बाद, अरिमतियाह का यूसुफ, जो यीशु का शिष्य था, लेकिन यहूदियों के डर से गुप्त रूप से, उस पर आलोचना करता था, और पिलातुस से अनुरोध करता था कि वह यीशु के शरीर को ले जाए, और पिलातुस ने उसे अनुमति दे दी।

इसलिए, वह आया और उसका शरीर ले गया। नीकुदेमुस भी, जो पहले रात में यीशु के पास आया था, इसलिए न केवल अध्याय 7 में बल्कि अब 19 में, हमारे पास एक व्याख्यात्मक टिप्पणी है ताकि हम नीकुदेमुस का टुक न खो दें, लगभग 75 पाउंड वजन का लोहबान और एलो का मिश्रण लेकर आया। हम यहाँ बहुत सारे पैसे की बात कर रहे हैं।

इसलिए, वह यीशु के साथ अपनी पहचान बना रहा है। वह मर चुका है, लेकिन फिर भी, वह उसका सम्मान कर रहा है। इसलिए, उन्होंने यीशु के शरीर को लिया और उसे मसालों के साथ सनी के कपड़े में बांध दिया, जैसा कि यहूदियों के दफनाने का रिवाज है।

अब, जिस जगह पर उसे क्रूस पर चढ़ाया गया था, वहाँ एक बगीचा था, और बगीचे में एक नई कब्र थी जिसमें अभी तक किसी को नहीं रखा गया था। इसलिए, यहूदियों के तैयारी के दिन के कारण, उस दिन के कारण, क्योंकि कब्र पास ही थी, उन्होंने यीशु को वहाँ रख दिया। क्या मैं नीकुदेमुस को एक ज्वलंत प्रचारक कह रहा हूँ? नहीं।

लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि वह बाहर आता है और यीशु के क्रूस पर चढ़े शरीर के साथ पहचान करके गवाही देता है, जिससे फिर से, एक तरह से, एक अंतर्निहित स्वर स्थापित होता है, मुख्य जोर नहीं, यहां तक कि द्वितीयक जोर भी नहीं, लेकिन ऐसा लगता है कि यह मेरे लिए वहां है। निकोडेमस इजरायल की स्थापना के खिलाफ खड़ा है। इस अर्थ में, यहां उसके अंतिम कार्य, उसके अंतिम कार्य जो दर्ज किए गए हैं, उन पर और यीशु के बारे में उनके आकलन पर एक निर्णय है।

अध्याय 9 में अंधे आदमी के बारे में अगर कोई क्षमाप्रार्थी भाव है, तो वह यही है। यह यहाँ सबसे ज्यादा प्रचलित है। मैं इस पर और अधिक काम करूँगा और मैं कह रहा हूँ, लेकिन अभी के लिए, बस इस अध्याय में क्षमाप्रार्थी विषय को रेखांकित करने के लिए।

आप कहानी जानते हैं। यीशु ने एक ऐसे व्यक्ति को ठीक किया जो जन्म से अंधा था, यह एक अभूतपूर्व चमत्कार था। वह व्यक्ति आभारी है, और वह व्यक्ति साहसी है।

9:22. क्या यह तुम्हारा बेटा है? 9:19. तुम किसको कहते हो कि वह जन्म से अंधा था? फिर वह अब कैसे देख सकता है? उसके माता-पिता ने कहा, हम जानते हैं कि यह हमारा बेटा है, और हम जानते हैं कि वह जन्म से अंधा था, लेकिन हम नहीं जानते कि किसने उसकी आँखें खोलीं। उससे पूछो। वह सयाना है।

वह खुद के लिए बोलेगा। शायद वे नहीं जानते कि यीशु कौन है, लेकिन फिर भी। खैर, जॉन हमें एक और संपादकीय टिप्पणी देता है।

उसके माता-पिता ने ये बातें इसलिए कहीं क्योंकि वे यहूदियों से डरते थे। यहूदी पहले से ही इस बात पर सहमत थे कि अगर कोई यीशु को मसीह मानता है, तो उसे आराधनालय से बाहर निकाल दिया जाना चाहिए। आलोचकों ने जॉन के सुसमाचार पर यहूदी-विरोधी होने का आरोप लगाया।

उन्होंने आरोप लगाया कि यह यहाँ अनैतिहासिक है। निश्चित रूप से आराधनालय सेवा में शामिल औपचारिक शाप शिमोना एज्रा के 18 आशीर्वादों में बाद में आए। लेकिन पहले से ही हम सभी चार सुसमाचारों में यीशु के प्रति शत्रुता रखते हैं।

और यह भी हो सकता है। यह मामला है। यह कोई औपचारिक आदेश नहीं है जिस पर सैन्हेद्रिन ने सहमति जताई है और इसे आधिकारिक प्रार्थनाओं का हिस्सा बनाया है ताकि ईसाई अब आराधनालय में पूजा न कर सकें।

क्योंकि ऐसा करने से वे यीशु को शाप देंगे। हाँ, यह अभी तक नहीं हुआ है। यहाँ तक कि जब यूहन्ना ने लिखा था।

लेकिन इसकी शुरुआत इस बात से झलकती है कि उन्होंने इस आराधनालय की मण्डली को क्या बताया। पद 24. इसलिए, दूसरी बार, उन्होंने उस व्यक्ति को बुलाया जो जन्म से अंधा था और उससे कहा, परमेश्वर की महिमा करो।

वे उसे शपथ दिला रहे हैं। हम जानते हैं कि यह आदमी पापी है, उसने उत्तर दिया। वह पापी है या नहीं, मुझे नहीं पता।

एक बात मैं जानता हूँ कि हालाँकि मैं अंधा था, लेकिन अब मैं देख सकता हूँ। यह हास्यास्पद है। जॉन के सुसमाचार में एक साक्ष्यपूर्ण क्षमाप्रार्थी है जो यहूदियों को पागल कर देता है।

यहाँ लाज़र को उसके सम्मान में आयोजित भोज में दिखाया गया है। अध्याय 12 की शुरुआत में यहूदी नेताओं ने लाज़र के लिए मृत्यु वारंट जारी कर दिया।

वे उस भोज में भाग नहीं लेते जिसमें परमेश्वर की महिमा की जाती है कि एक मृत व्यक्ति को पुनर्जीवित किया गया है। नहीं, वे यीशु से घृणा करते हैं, और वे उसके साक्ष्यपूर्ण क्षमायाचना से घृणा करते हैं। यहाँ, शायद उन्होंने सोचा कि माता-पिता कहेंगे, नहीं, वह अंधा पैदा नहीं हुआ था।

उसे बस आँखें सिकोड़नी पड़ीं। वह थोड़ा-बहुत देख सकता है। नहीं, वह हमारा बेटा है।

वह जन्म से ही अंधा था। इसके अलावा, हम कुछ नहीं जानते। अरे यार, मुझे यह लड़का बहुत पसंद है।

मैं अंधा था, लेकिन अब देख सकता हूँ। उसने तुम्हारे साथ क्या किया? तुम्हारी आँखें कैसे खुलीं? मैंने तुम्हें पहले ही बता दिया है, और तुम नहीं सुनोगे। यहाँ वह है।

आप इसे फिर से क्यों सुनना चाहते हैं? क्या आप भी उसके शिष्य बनना चाहते हैं? साथ ही, वह व्यक्ति यीशु के साथ अपनी पहचान बना रहा है। जैसे-जैसे वह चिंतन करता है, उसकी समझ आगे बढ़ती है। खैर, जब वह आज्ञा मानता है, तो वह सिलोम के तालाब में जाता है, जिसे मेरा मानना है कि पुरातत्वविदों ने खोज लिया है, और नहाता है।

बेशक, उसने कभी यीशु को नहीं देखा। खैर, वह एक पैगम्बर है। वह निश्चित रूप से ईश्वर की ओर से है।

अध्याय समाप्त होने तक वह पूजा कर रहा है। ओह, वह नेताओं के खिलाफ़ है। यह व्यंग्य है, विडंबना है, व्यंग्य है।

यह बहुत ही उल्लेखनीय है। यह मेरे लिए हास्यप्रद भी है। क्या आप भी उनके शिष्य बनना चाहते हैं? ओह, वे बहुत नाराज़ हैं।

उन्होंने उसे बुरा-भला कहा। तुम उसके चेले हो। हम मूसा के चेले हैं।

हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मूसा के ज़रिए बात की है, लेकिन इस आदमी के बारे में, हम नहीं जानते कि वह कहाँ से आया है। ओह-ओह, उन्होंने इस छोटे से लड़के को आग लगा दी। आदमी ने जवाब दिया, क्यों, यह एक आश्चर्यजनक बात है।

तुम नहीं जानते कि वह कहाँ से आया है, फिर भी उसने मेरी आँखें खोल दीं। हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता, लेकिन अगर कोई परमेश्वर का उपासक है और उसकी इच्छा पूरी करता है, तो परमेश्वर उसकी सुनता है। दुनिया की शुरुआत से लेकर अब तक कभी ऐसा नहीं सुना गया कि किसी ने जन्म से अंधे व्यक्ति की आँखें खोली हों।

यह अच्छा क्षमाप्रार्थी है। अगर यह आदमी भगवान से नहीं होता, तो वह कुछ भी नहीं कर सकता था। उन्होंने कहा, तुम घोर पाप में पैदा हुए हो, तुम अंधे भिखारी हो।

तुम पहले अंधे भिखारी थे। क्या तुम हमें सिखाओगे? और जाहिर है, उसे वही भाग्य मिला जिससे उसके माता-पिता डरते थे, लेकिन वह दुखी नहीं है। यीशु उसे खोजता है, और आप कहानी का बाकी हिस्सा जानते हैं।

तो, जॉन के सुसमाचार का मुख्य उद्देश्य, इसमें कोई संदेह नहीं है, सुसमाचार प्रचार है। महिमा की पुस्तक के प्रारंभिक भाग, विदाई प्रवचनों और महायाजकीय प्रार्थना का द्वितीयक उद्देश्य शिक्षा देना है। मैं इसे मुख्य रूप से सुसमाचार प्रचार के रूप में नहीं देखता।

ओह, यह सुसमाचार प्रचार में योगदान देता है क्योंकि शिक्षा उन शिष्यों को प्रेरितों में बदलने के लिए डिज़ाइन की गई है जो हर जगह परमेश्वर के वचन को साझा करेंगे। तीसरा, एक अंतर्निहित स्वर, मुख्य विचार नहीं, दूसरा भी नहीं, शायद तीसरा कहलाने के लायक भी न हो। संभवतः, नैथेनियल के साथ एक क्षमाप्रार्थी अंतर्निहित स्वर है।

यह वहाँ स्पष्ट नहीं है। उसे एक ऐसा इस्राएली कहा गया है जो न तो कपटपूर्ण है, न ही छल-कपटपूर्ण। मेरा सुझाव है कि आपको इसे पढ़ना चाहिए, खासकर इस्राएलियों के विरुद्ध सिनॉट्रिक गॉस्पेल पढ़ने के बाद, जिनमें बहुत अधिक छल-कपट है।

नीकुदेमुस अपने साथी सदस्यों और फरीसियों के ऊपर खड़ा है, और इस्राएल के शिक्षक के रूप में, यीशु का पक्ष लेता है और जिज्ञासु है, अध्याय 3 में, वह खड़ा है, और अध्याय 7 में, वह खुद को यीशु के क्रूस पर चढ़ाए गए शरीर के साथ पहचानता है। उसे इससे क्या हासिल हुआ? कुछ भी नहीं। फिर, इस क्षमाप्रार्थी मूल भाव का प्रतीक एक अंधा आदमी है जिसके पास कोई शिक्षा नहीं है, और वह इस्राएल के नेताओं का विरोध करता है, अपने अनुभव और अपने स्वयं के घरेलू धर्मशास्त्र से यीशु के बचाव में उनके खिलाफ बोलता है।

वह परमेश्वर की ओर से बोलता है। परमेश्वर अपने पुत्र के चिन्ह की गवाही दे रहा है, जो विश्वास जगाने के लिए बनाया गया है, जैसा कि पहले अंधे व्यक्ति में हुआ था, जिससे अनंत जीवन की ओर अग्रसर होता है। मुझे यह बहुत पसंद है।

हम अध्याय 9 के अंत में यीशु के व्यंग्यात्मक और व्यंग्यात्मक शब्दों को बाद में देखेंगे, चौथे सुसमाचार के उद्देश्यों के लिए इतना ही। मैं जो कुछ भी अभी कह रहा हूँ, उसका सर्वेक्षण करना चाहता हूँ और उन्हें हमारे अगले व्याख्यान में खोलना चाहता हूँ, लेकिन कम से कम उन्हें चर्चा में तो लाना चाहिए।

यीशु का 'मैं कह रहा हूँ'। परिभाषा। यह वास्तव में वह जगह नहीं है जहाँ वह कहता है कि मैं हूँ, अगर ऐसा होता।

अध्याय 8 के अंत में, यूहन्ना 8, 58, अब्राहम के होने से पहले का महान कथन, मैं हूँ, शामिल किया जाएगा, लेकिन यह इस संबंध में मैं हूँ कथन नहीं है क्योंकि ये इस पैटर्न का पालन करते हैं। यीशु बोलते हैं और कहते हैं, मैं हूँ, और फिर एक विधेय नाममात्र।

मैं जीवन की रोटी हूँ। जगत का प्रकाश हूँ। द्वार हूँ।

मार्ग, सत्य और जीवन। अच्छा चरवाहा। दरअसल, मेरे नोट्स यहाँ क्रम से नहीं हैं।

सच्ची बेल। मैं पुनरुत्थान और जीवन हूँ। जब हम पूरी बात को बड़े नज़रिए से देखते हैं तो वह क्या कर रहा है? पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के विपरीत जिन्होंने कहा, प्रभु ऐसा कहते हैं, यीशु कहते हैं, ठीक है, कभी-कभी वह कहते हैं कि यह लिखा है, लेकिन यहाँ वह कहते हैं, मैं हूँ।

वह ईश्वर के लिए बोलता है। ओह, वह ईश्वर के लिए एक इंसान के रूप में बोलता है, लेकिन वह ईश्वर के लिए एक दिव्य इंसान के रूप में बोलता है। वाह।

वह पुराने नियम के पात्रों को लेता है और उन्हें खुद पर इस तरह लागू करता है कि वह खुद को ईश्वर के स्थान पर रखता है। मैंने पहले 14.6 का उल्लेख किया था। मुझे उसी से शुरू करना चाहिए क्योंकि मैं सात अलग-अलग बातें कह रहा हूँ, लेकिन सात अलग-अलग अर्थ नहीं, केवल तीन अलग-अलग अर्थ।

और तीनों अर्थ 14.6 में संक्षेपित हैं। यूहन्ना इस तरह से बहुत व्यवस्थित और मददगार है। वह नहीं चाहता कि हम इसे चूक जाएँ। यीशु मार्ग, उद्धारकर्ता, सत्य, प्रकटकर्ता और जीवन, जीवनदाता है।

वह मार्ग है। उसके बिना कोई भी पिता के पास नहीं आ सकता। अध्याय 14 के संदर्भ में, मैं हमारे ब्रेक से पहले यह करूँगा।

अध्याय 14 के संदर्भ में, यीशु अपने पिता के घर के बारे में बात करते हैं, जिसमें कई कमरे हैं। वह जानता है कि वे परेशान हैं और कहता है, परेशान मत हो। मैंने तुमसे कहा था कि मैं जा रहा हूँ, लेकिन मैं तुम्हारा ख्याल रखूँगा।

मैं तुम्हें अकेला नहीं छोड़ूँगा। मैं सत्य की आत्मा, जीवन की आत्मा को तुम्हारे साथ भेजूँगा, जो सहायक है।

इसका अनुवाद करना कठिन है, पैराक्लेटोस, पैराक्लेटे। अपने दिलों को परेशान मत होने दो। भगवान पर विश्वास रखो।

मुझ पर भी विश्वास करो, 14:1. मेरे पिता के घर में बहुत से कमरे हैं। यदि ऐसा न होता, तो क्या मैं तुमसे कहता कि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जा रहा हूँ? और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ, तो मैं फिर आऊँगा - दूसरे आगमन की भविष्यवाणी का एक साहसिक कथन।

और तुम्हें अपने पास ले जाऊंगा ताकि जहां मैं हूँ, तुम भी वहां रहो। और तुम जानते हो कि मैं कहां जा रहा हूँ। थॉमस को ईमानदारी और स्पष्टवादिता के लिए उच्च अंक मिलते हैं।

प्रभु, हम रास्ता नहीं जानते। हम नहीं जानते कि आप कहाँ जा रहे हैं। हम रास्ता कैसे जान सकते हैं? यीशु ने कहा, मैं ही रास्ता हूँ।

वह मार्ग के लिए सबसे कठिन ग्रीक शब्द है। पिता के स्वर्गीय घर का मार्ग यीशु है। मेरे बिना कोई भी पिता के पास नहीं आ सकता।

वाह! यह तो विशिष्टता का कथन है। स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया है।

प्रेरितों के काम 4:12, जिसके द्वारा हमें बचाया जाना चाहिए। लेकिन यीशु का नाम। यूसुफ और मरियम दोनों को उसका नाम यीशु रखने के लिए कहा गया।

इसका मतलब है कि प्रभु बचाता है या अगर आप चाहें तो उद्धारक। यीशु ही उद्धारकर्ता है। वह पिता के स्वर्गीय घर की ओर जाने वाला एकमात्र मार्ग है।

वह केवल इतना ही नहीं है। वह सत्य है। पिलातुस पूछता है, सत्य क्या है? यीशु सत्य का अवतार है।

वह शब्द बोलता है। कोई भी मनुष्य कभी नहीं बोला क्योंकि कोई भी मनुष्य कभी परमेश्वर नहीं था। ओह, और जैसा कि हमने प्रस्तावना में देखा, उसने अपने अंदर निवास करने वाले अनन्त जीवन के आधार पर परमेश्वर को प्रकट किया।

पद्य तीन। वह सभी सृजित जीवन का स्रोत था। और उसमें वह जीवन मनुष्यों का प्रकाश था।

यह ईश्वर का रहस्योद्घाटन था जो मनुष्यों पर चमक रहा था। इस प्रकार, यूहन्ना सामान्य रहस्योद्घाटन सिखा रहा है। प्रकटकर्ता लोगोस है, जो शब्द है।

वचन ने मनुष्य बनने से पहले ही परमेश्वर को प्रकट कर दिया। परमेश्वर के रूप में वचन, सूर्य, वचन, प्रकाश, त्रिदेवों में से दूसरा व्यक्ति, ने देहधारण से पहले परमेश्वर को प्रकट कर दिया। यूहन्ना के लिए यह कोई बड़ी बात या आश्चर्य की बात नहीं है कि देहधारण करने वाले वचन के रूप में, वह परमेश्वर को प्रकट करता है।

मुझे लगता है कि जॉन के दो महान क्राइस्टोलॉजिकल विषय हैं - यीशु जीवनदाता है। मुझे लगता है कि यह नंबर एक होगा। लेकिन नंबर दो यह है कि वह प्रकटकर्ता है।

वह पिता को पहले से कहीं ज़्यादा मशहूर कर देता है। जब वह कहता है कि मैं सत्य हूँ तो उसका यही मतलब होता है। हम देखेंगे कि मैं हूँ कहावतों में से एक और कहावत कहती है कि वह उद्धारकर्ता है, सिखाती है कि वह उद्धारकर्ता है।

और एक और बात जो मैं कह रहा हूँ वह यह है कि हमने अभी इसे देखा है। यूहन्ना 9, मैं जगत की ज्योति हूँ, प्रकट करता है कि वह परमेश्वर का प्रकटकर्ता है। मैं मार्ग हूँ, मैं सत्य हूँ, मैं जीवन हूँ।

क्या ज़्यादातर राशियों का मुख्य जोर पाँच है? एक, दो, तीन, चार, पाँच, छह। अगर आप 14, छह गिनते हैं, तो यह निश्चित रूप से दोगुना होगा। 14, छह तीनों अर्थों को एक कहावत में मिला देता है।

सात में से पाँच कथनों में कहा गया है कि मैं जीवन हूँ। वह दाता है, अनंत जीवन का दाता है; मैं इसे दो तरह से कहूँगा। ईश्वरीय संप्रभुता के संदर्भ में, पिता ने उसे सब कुछ दिया है।

मानवीय जिम्मेदारी के संदर्भ में, जो लोग उस पर विश्वास करते हैं, वे दोनों सत्य हैं। वे दोनों सत्य हैं। सात, मैं कह रहा हूँ।

मैं जीवन की रोटी हूँ, अध्याय छह। संसार का प्रकाश, जिसका उल्लेख आठवें अध्याय में किया गया है, नौवें अध्याय में विकसित हुआ। मैं द्वार हूँ, अध्याय 10।

मार्ग, सत्य, अच्छा चरवाहा, 10. मार्ग, सत्य और जीवन, 14, छः, सभी कथनों के अर्थ का सारांश, 15 में सच्ची दाखलता, पुनरुत्थान, अध्याय 11 में जीवन। हमारे अगले व्याख्यान में, हम उस पर विस्तार से काम करेंगे जो मैं कह रहा हूँ।

यह रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा जोहानिन धर्मशास्त्र पर दिया गया शिक्षण है। यह सत्र 5 है, जॉन के सुसमाचार के उद्देश्य।